जन्म शताब्दी पुस्तकमाला- २७

पाना है तो देना सीखो

(प्रवचन)

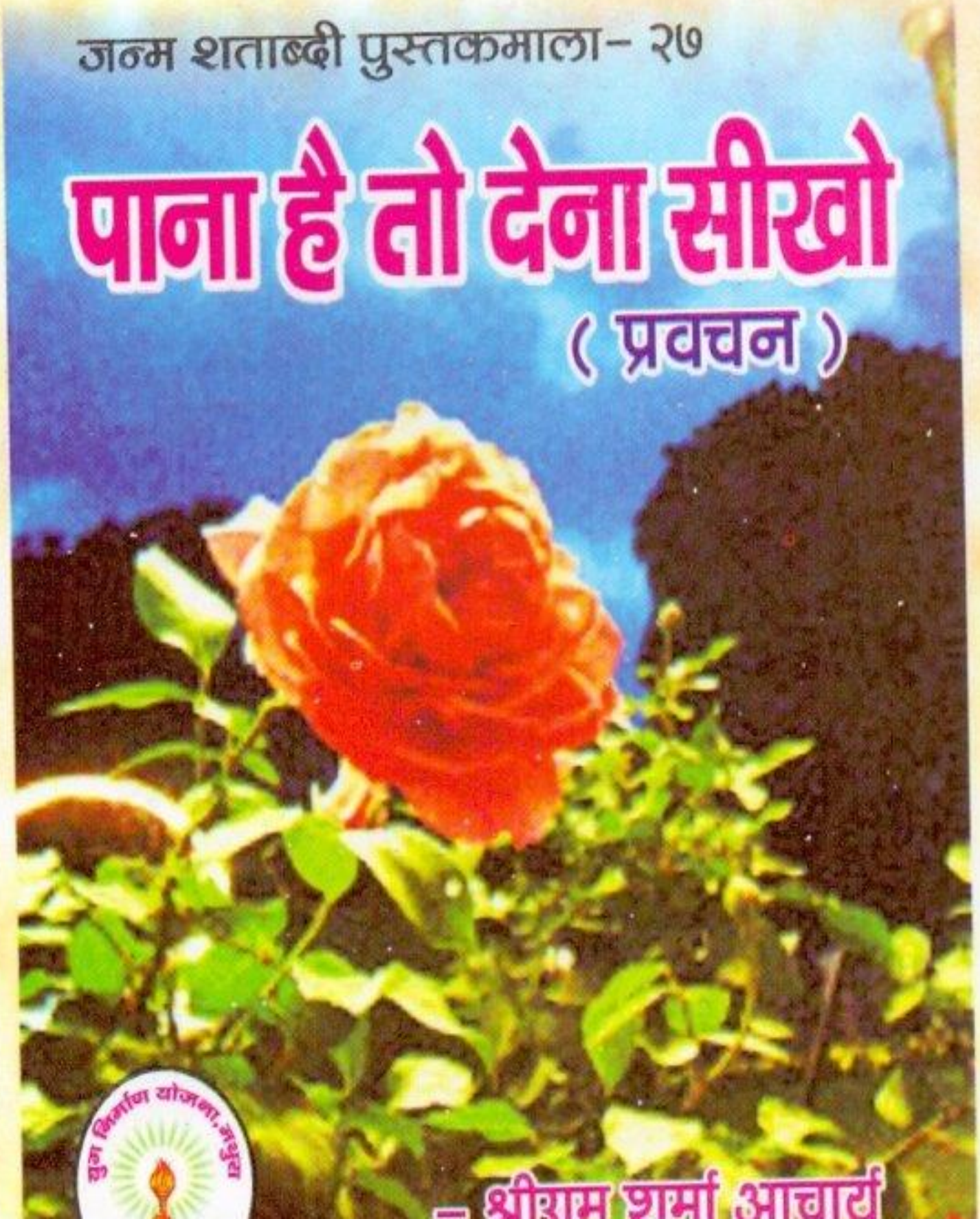

- श्रीराम शर्मा आचार्य

पाना है तो देना सीखो

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो, दो दिनों से आप यह सुन रहे हैं कि कायाकल्प क्या है ? कल्प के लिए आपको क्या करना पड़ेगा ? कल्प के लिए दूसरे भी आपकी सहायता करेंगे, पर आप यह मानकर चलिए कि आपको भी कुछ करना पड़ेगा। अगर आप कुछ नहीं करेंगे, केवल पूजा ही करते रहेंगे, भीतर वाले हिस्से को ठीक नहीं करेंगे, केवल कर्मकांड तक ही सीमित रह जाएँगे तो उद्देश्य कैसे पूरा होगा ? यह कल्प कोई शारीरिक थोड़े ही है जो क्रियाओं भर से पूरा हो जाएगा। यह आंतरिक कायाकल्प है, इसके लिए आपको अपनी मनःस्थिति को, अपने चिंतन को, अपनी विचारणाओं को, आस्थाओं को, दृष्टिकोण को भी बदलना पड़ेगा। यदि यह कर सकें तो समझिए कि बाहर की सहायता भी आपको जरूर मिलकर रहेगी।

आमतौर से लोग यह समझते हैं कि देवताओं की खुशामद करके और उनसे कुछ प्राप्त करके हम अपना फायदा उठा लेंगे अध्यात्म इसी का नाम है, पर लोगों का यह ख्याल गलत है। देवताओं का अनुग्रह मिलता तो है, यह मैं नहीं कहता कि नहीं मिलता, लेकिन बिना शर्त नहीं मिलता। कुपात्रों को भी नहीं मिलता। पात्रता पहले साबित करनी पड़ती है, इसके बाद में ही कहीं ऐसा होता है कि देवता कोई सहायता कर सकें और किसी भक्त या साधक को लाभ पहुँचाने में मददगार बन सकें। आपको भी यही विचार करके चलना चाहिए। आपको देवानुग्रह की आशा तो करनी चाहिए, गुरुजी के आशीर्वाद की आशा तो करनी चाहिए, गायत्री माता की कृपा की आशा तो करनी चाहिए, लेकिन उस आशा के साथ में जो एक शर्त जुड़ी है, उसे भूल नहीं जाना चाहिए। वह शर्त यह है कि आप अगर अपनी पात्रता साबित करेंगे तो देवता आपकी सहायता जरूर करेंगे और यदि आप अपनी पात्रता साबित नहीं कर सकते तो

फिर यह विश्वास रखिए कि आपको निराश ही होना पड़ेगा। देवता से किसी ऐसी कृपा की आशा मत कीजिए जो कि कुपात्रों को भी मिल सकती है। देवता बड़े होशियार होते हैं, मंत्र भी बहुत होशियार होते हैं। आप कर्मकांड करें, यह अच्छी बात है, लेकिन कर्मकांडों को देखकर देवता थोड़े ही प्रसन्न होते हैं। वे तो कर्मकांडों के पीछे छिपी हुई साधक की भावनाओं को देखते हैं और अगर भावनाएँ सही हैं तो निश्चित रूप से वही फल देते हैं जैसा कि आपने सुना है।

इस संदर्भ में आप एक उदाहरण पर ध्यान दीजिए। बादलों को आप देखते हैं न, वे कितनी कृपा करते हैं। बादलों के बराबर उदार देवता कौन सा हो सकता है? वह बिना कीमत पानी बरसाता है और चाहे जितना बरसाता है, वह समुद्र से लाता है और प्यासी जमीन को पानी पूरा करने के लिए कितना पानी बरसाता है, लेकिन आपको ध्यान है क्या कि उस पानी से कौन लाभ उठा पाता है? आप

यह बताइए कि उससे हर कोई फायदा उठा लेता है क्या? हर कोई फायदा नहीं उठा सकता। बादलों से हर जगह हरियाली हो जाती है, लेकिन जो चट्टानें हैं, उन चट्टानों पर एक तिनका भी पैदा नहीं होता। आप नदी में पड़े हुए पत्थरों को जरा देखिए न। नदी के पानी से किनारे गीले हो जाते हैं, जमीन गीली हो जाती है, सब जगह गीले हो जाते हैं, पर जो चट्टान-पत्थर का टुकड़ा नदी के बीच में सैकड़ों वर्षों से पड़ा हुआ है, जरा उसे तोड़-फोड़कर देखिए नदी का उस पर कोई अनुग्रह नहीं दीख पड़ेगा, क्योंकि वह पत्थर है। बादलों के अनुग्रह से भी उसे कोई लाभ नहीं हो सका, क्योंकि वह चट्टान है, जबकि आप देखते हैं कि बादलों के पानी से भूमि में हरियाली पैदा हो जाती है, पर चट्टान में क्यों नहीं पैदा होती? छात्रवृत्ति के बारे में आप जानते हैं कि वह फर्स्ट डिवीजन में पास होने वाले छात्रों को सरकार की ओर से दी जाती है। थर्ड डिवीजन में पास होने वाले को दी जाती है क्या? फेल होने वाले को

मिलती है क्या ? नहीं। साहब, हम पर दया कीजिए, उदारता कीजिए, यह मत कहिए। इस दुनिया में दया का, उदारता का कोई खास महत्त्व नहीं है।

दुनिया में सर्वत्र पात्रता का महत्त्व है, उसी की परख की जाती है। आपने देखा होगा कि किसी खूबसूरत लड़की को-कन्या को बहुत से पड़ोसी, आवारा लड़के यह माँग सकते हैं कि आप अपनी लड़की हमारे हवाले कर दीजिए और हमसे शादी कर दीजिए। इस संबंध में आपका क्या ख्याल है कि कोई अपनी जवान लड़की को, जो पढ़ी-लिखी भी है, सुंदर-सुयोग्य भी है, किसी माँगने वाले के सुपुर्द कर देगा क्या ? नहीं करेगा। यद्यपि वह बेचारा प्यासा फिर रहा है कि कोई अच्छा जँवाई मिल जाए तो हम पैसे भी देंगे, कपड़ा भी देंगे, खुशामद भी करेंगे, बरात भी आएगी। वह कितना तलाश करता फिरता है। क्यों साहब-तलाश क्यों करते हैं आप जामाता को, जबकि आपके पड़ोस में ही पचास जामाता हैं और इसके लिए तैयार हैं कि हम भी आपके जँवाई

बनेंगे। हमको भी आप अपनी लड़की दे दीजिए, फिर बेटी का बाप क्यों नहीं देता उनको ? क्यों उनसे मना कर देता है ? क्यों लड़ने-झगड़ने के लिए अमादा हो जाता है ? क्यों अच्छे लड़के के पास जाता है, खुशामद करता है, पैसा भी देता है, मिन्नतें भी करता है ? ऐसा क्यों होता है ? क्या बता सकते हैं आप ? सिर्फ एक ही वजह है कि वह जामाता इस लायक है, उसमें इतनी पात्रता है कि वह उस लड़की का गुजारा कर सके, भरण-पोषण कर सके, उस लड़की की ठीक देखभाल कर सके। इसलिए लड़की का बाप ऐसे जामाता को तलाश करता है जो कि इसके योग्य हो। ठीक-बिलकुल ठीक यही बात समझिए कि देवताओं के अनुग्रह हर एक के हिस्से में नहीं आ सकते। गुरुओं के अनुग्रह हर एक के हिस्से में नहीं आ सकते। रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद को अनुग्रह दिया था। माँगने वाले तो हजारों आदमी उनके पास आते थे और अपनी छोटी-मोटी जरूरतें पूरा करा करके भाग खड़े होते थे,

लेकिन वह जो देना चाहते थे, वह केवल उनने विवेकानंद को ही दिया, क्योंकि उसके अंदर पात्रता का अंश पाया इसलिए अपनी आध्यात्मिक संपदा उन्हीं के सुपुर्द कर दी। माता समझती है कि बच्चे को कितना दूध चाहिए, वह उसी के अनुरूप उसे देती है। माता उसकी पात्रता को समझती है।

बादल कहाँ बरसते हैं ? वहाँ बरसते हैं जहाँ कि घनी हरियाली होती है। बादल वहाँ बरसने से इनकार कर देते हैं, जहाँ पेड़ नहीं होते। रेगिस्तानों में पानी कहाँ बरसता है ? पेड़ अपनी चुंबक शक्ति से बादलों को बरसने के लिए मजबूर कर देते हैं। यही कारण है कि जहाँ पेड़ नहीं होते हैं, वहाँ कम पानी बरसता है। लीबिया में कुछ दिन पहले ऐसा ही हुआ था। पेड़ काट डाले गए और उसका परिणाम यह हुआ कि पानी बरसना बंद हो गया और सूखा पड़ गया। जब फिर से पेड़ लगाए गए तब बादलों ने बरसात की, मतलब यह है कि बादल पेड़ों के चुंबकत्व से खिंचते चले आते हैं। खदानें कैसे बनती

हैं ? आप जानते हैं क्या ? खदानों में कहीं थोड़ा सा लोहा, थोड़ा पीतल, चाँदी, सोना वगैरह होता है और वे अपने चुंबकत्व से दूर-दूर फैले हुए अपने सजातीय कणों को अपनी ओर घसीटते रहते हैं और बड़ी खदानें बनती-बढ़ती रहती हैं। यदि इस साल सौ टन लोहा है तो अगले वर्ष दो सौ टन हो जाएगा, उससे अगले साल तीन सौ टन हो जाएगा, क्योंकि वह खदान जो है चारों ओर से खींचती रहती है और जमा करती रहती है। ठीक यही बात देवताओं की कृपा के बारे में है। उनकी कृपा को घसीटा जा सकता है, बुलाया जा सकता है। देवता अपने आप देंगे ? नहीं। अपने आप कौन दे देगा ? आप अपने पैसे किसी को दे देंगे क्या ? नहीं। बैंक वाला चाहे किसी को रुपए दे देगा क्या ? नहीं। क्यों ? क्योंकि बैंक वाला उधार देने से पहले हजार बार यह तलाश करता है कि जिस आदमी को दिया जाने वाला है, वह उस पैसे का ठीक इस्तेमाल करेगा कि नहीं करेगा। बैंक का पैसा वापस मिलेगा कि नहीं मिलेगा।

यह विश्वास न हो तो कोई देने को तैयार ही नहीं हो सकता। आपने देखा है न समुद्र को, समुद्र के पास कितनी सारी नदियाँ अपना सामान लेकर भागती हैं और उससे कहती हैं कि यह सब हमारा पानी लीजिए। क्यों लीजिए? क्योंकि वे समझती हैं कि हमारे पानी को जमा करने की शक्ति इसमें है और हम जब अपने पानी को जमा करती हैं तो वह एक मुनासिब जगह पर जमा ही नहीं हो जाएगा, हमें वापस मिलता भी रहेगा, वाष्पीभूत बादलों से वर्षा के रूप में।

नदियों के तरीके से दैवी शक्तियाँ भी देती तो हैं, पर हर एक को नहीं दे सकतीं। आप यह भूल मत जाइए कि जो कोई माँगेगा, देवता उसी को दे देंगे, जो नारियल चढ़ा देगा उसी को दे देंगे। ग्यारह सौ जप कर देगा तो उसी को दे देंगे, पाठ कर देगा उसी को दे देंगे। इस तरह बरगलाने और फुसलाने से आप देवता के अनुग्रह नहीं प्राप्त कर सकते। कपड़े के तरीके से, कलेवर के तरीके से क्रियाएँ आवश्यक तो हैं, क्रियाएँ

आवश्यक तो हैं चाकू के तरीके से, लेकिन सामान तो हो आपके पास। चाकू से कैसे काटेंगे कर्म को? इसलिए केवल क्रियाएँ बहुत थोड़ा सा ही काम करती हैं। जो कर्मकांड आप करते हैं–जप करते हैं और क्रिया से करते हैं, यह हैं तो महत्त्वपूर्ण और जरूरी भी, लेकिन आप यह ख्याल मत कीजिए कि केवल जप करने से या अन्न कमं खाने से आप कोई लंबे–चौड़े फायदे उठा सकेंगे। आपको अपनी मन:स्थिति को जरूर बदलना पड़ेगा। फूल जब खिलता है, तब आपने देखा होगा कि उसके ऊपर कितने भौंरे आकर बैठ जाते हैं, कितनी तितलियाँ और शहद की मधुमक्खियों के गुच्छे मँडराने लगते हैं। कब आते हैं? जब फूल खिलता है तब। फूल के तरीके से अगर आप अपने जीवन को खिला सकते हों, अपनी पात्रता को विकसित कर सकते हों, अपनी मन:स्थिति में हेर–फेर कर सकते हों तो आपको हम यकीन दिला सकते हैं कि देवताओं के अनुग्रह आपको जरूर मिलेंगे जो आप यहाँ प्राप्त करने आए हैं। आपको गुरुओं के

आशीर्वाद, हमारे आशीर्वाद मिलेंगे और दूसरे गुरु भी आपके पास आएँगे और आपकी आवश्यकता को जरूरी पूरी कर देंगे।

पात्रता की परख हर जगह होती है। आप इस ख्याल में मत रहिए, मिन्नतें मत माँगिए, नाक मत रगड़िए, झोली मत फैलाइए और यह उम्मीदें मत कीजिए कि कोई आदमी या देवता आपकी पात्रता को देखे बिना केवल आपके क्रियाकृत्यों से ही प्रसन्न हो करके आपको निहाल कर जाएगा। ऐसा हो नहीं सकता। आपको इतिहास मालूम है न, शिवाजी को 'भवानी' नाम की एक तलवार मिली थी। क्यों मिली थी? इसलिए मिली थी कि उसने अपनी पात्रता स्थापित की थी। उनके गुरु ने सिंहनी का दूध दुहने के लिए परीक्षा ली थी और कहा था आप जाइए सिंहनी का दूध लाइए। देखा गया कि वह इतना निष्ठावान है कि अपने कर्त्तव्य के लिए अपने प्राण भी दे सकता है तो भवानी से उन्होंने प्रार्थना की कि आप ऐसी तलवार दीजिए जो कि अजेय हो,

अक्षय हो। अर्जुन को गांडीव कहाँ से मिला था? इंद्र देवता ने दिया था। अर्जुन को ही क्यों दिया औरों को क्यों नहीं दिया। इंद्र ने अर्जुन को देने से पहले इम्तहान लिया था कि इतनी कीमती चीज विश्वस्त आदमी को, प्रमाणित आदमी को ही दी जाए, हर एक को नहीं दी जाए। आपको याद होगा कि जब अर्जुन वहाँ गए थे तो उनका इम्तहान लेने के लिए इंद्रलोक की सबसे खूबसूरत युवती उर्वशी को भेजा गया था। वह ऐसे हाव-भाव करने लगी और उससे शादी की बात कहने लगी। अर्जुन ने कहा, "आप तो हमारी माँ के बराबर हैं और हम आपके चरणों की धूल अपने सिर पर रखते हैं। आप यह समझ लीजिए कि हम ही आपकी संतान हैं।" इस जवाब से प्रसन्न होकर इंद्र ने यह समझ लिया कि यह व्यक्ति इस लायक है कि इसको गांडीव दे देना चाहिए। इंद्र को जब यह विश्वास हो गया था कि अर्जुन गांडीव के लायक हैं तो उन्होंने उसे प्रसन्नतापूर्वक दे दिया था।

आपको बापा जलाराम की कहानी मालूम है न। भगवान उनके यहाँ आए थे और उनको एक झोली दे गए थे, जिसमें से अक्षय अन्न के भंडार निकलते थे। यह वरदान भगवान ने दिया था जो अभी भी है। आप यदि गुजरात के वीरपुर नामक गाँव में कभी पहुँचें तो आपको एक सिद्धपुरुष जलाराम बापा का एक स्थान मिलेगा। वहाँ अन्न की एक झोली अभी भी टँगी हुई है जो भगवान ने उन्हें दी थी। जलाराम बापा की इच्छा थी कि हमारे दरवाजे पर से कोई भी खाली हाथ न जाने पाए। भगवान ने उनकी इच्छा पूरी की। उन्हीं की क्यों पूरी की, औरों की क्यों नहीं की? इच्छाएँ, मनोकामनाएँ तो सभी करते हैं, पर उनकी इच्छा पूरी क्यों नहीं करते भगवान? क्योंकि जलाराम बापा इम्तहान में पास हो गए थे। कौन से इम्तहान में पास हो गए थे? उन्होंने दो प्रतिज्ञाएँ की थीं कि जलाराम मेहनत-मजूरी करेंगे और खेती में से अनाज उगाएँगे और उनकी पत्नी ने प्रतिज्ञा की थी कि पेट

भरने के बाद में जो कुछ भी अनाज हमारे पास बचेगा, उसे दुखियारों को, संतों को खिलाते रहेंगे। उनकी स्त्री खाना पकाती रहती थी सारा दिन और बापा जलाराम खेती-बाड़ी करते रहते थे। वह अनाज पैदा करते थे और उनकी धर्मपत्नी खिलाती रहती थीं। इस बीच पेट भरने के लिए जो मिल गया उसी से गुजारा कर लिया बस। संत की यही निशानियाँ हैं कि उसका चरित्र ऊँचा होना चाहिए। भक्त का चरित्र ऊँचा न हुआ तब ? तब सभी कथा-कीर्तन, भजन-पूजन, जप-तप अनुष्ठान बेकार हैं। नहीं साहब हम तो अखंड कीर्तन करते हैं, जागरण करते हैं, जप-तप करते हैं। आप यह सब करते हैं तो आपको मुबारक, लेकिन पहले आप सिर्फ एक जवाब दीजिए कि आप अपनी पात्रता को विकसित करते हैं कि नहीं ? भगवान सिर्फ दो ही बातें देखते रहते हैं और वे आपकी मानसिक पवित्रता और आपकी पूजा। पूजा तो अपने मन को धोने का एक तरीका है।

मित्रो, भगवान को बरगलाया नहीं जा सकता, उसे फुसलाया नहीं जा सकता। भगवान के साथ में ब्लैकमेलिंग नहीं की जा सकती। भगवान के साथ में जुड़ने का एक ही सीधा रास्ता है कि अपनी पात्रता साबित करें भगीरथ के तरीके से। भगीरथ गंगा जी को माँगने गए थे। उन्हें पानी की जरूरत थी अपनी फसल के लिए और अपने बाप-दादाओं का उद्धार करने के लिए भी, साथ में इससे भी बड़ी जरूरत थी कि सारे संसार को पानी मिलना चाहिए। भगीरथ नि:स्वार्थ थे, उनने तप किया। यदि यह कारण रहा होता कि भगीरथ गंगा जी को अपने पास बुलाएँगे, पानी को स्टोर करेंगे, हर आदमी से पैसा वसूल करेंगे और गंगा जी से अपना उल्लू सीधा करेंगे, तो आप विश्वास रखिए तब गंगा जी कभी भी भगीरथ के चंगुल में फँसने के लिए तैयार न हुई होतीं। उनने कारण की खोज की और उस आदमी की नीयत को जाना। नीयत का अर्थ है—पात्रता, चिंतन का अर्थ है—पात्रता, चरित्र का अर्थ है—

पात्रता। पात्रता आपको विकसित करनी ही चाहिए। देवताओं के अनुग्रह में कोई कमी नहीं है, यदि कमी है तो आप में पात्रता की। गंगा हिमालय से जब निकलकर चली और बोली कि अब हम लोगों की प्यास बुझाएँगी, पशु-पक्षियों की प्यास बुझाएँगी, खेतों में हरियाली पैदा करेंगी, अब हिमालय में रहने और आपकी गोदी में ठहरने का हमारा अब जरा भी मन नहीं है, तब हिमालय ने बहुतेरा समझाया कि आप तो यहीं रहिए यहाँ क्या कष्ट है आपको ? गंगा ने कहा नहीं, कष्ट का सवाल नहीं है, पर अब हमारी आत्मा नहीं मानती है। हमारी आत्मा कहती है कि हमको अपने को श्रेष्ठ कामों में खपा देना चाहिए, लगा देना चाहिए। बस-चल पड़ीं गंगा। लोगों ने यह भी कहा कि आप सूख जाएँगी, खाली हो जाएँगी और आप दिवालिया हो जाएँगी, लेकिन गंगा ने कहा, "तो दिवालिया होने में क्या कोई हर्ज है ? जिंदगी एक अच्छे काम में लग जाए तो कोई हर्ज है क्या ?" जब वह चल पड़ीं तो हिमालय ने

देखा कि ऐसी शानदार छोकरी, ऐसा शानदार उसका मन, ऐसी शानदार उसकी भावना, इसको कमी नहीं पड़ने देना चाहिए। हिमालय ने उसको यकीन दिलाया कि बेटी! तुम बराबर बहती रहना, तुम्हारे जलस्रोत को सूखने का कभी भी मौका नहीं आएगा। हमारी बरफ बराबर गलती रहेगी और तुम्हारा पेट और तुम्हारी जरूरतों को पूरा करती रहेगी। लाखों वर्ष हो गए गंगा को बहते हुए, पर कुछ कमी पड़ी क्या? कमी नहीं पड़ी। देवताओं के अनुग्रह पाने के यही तरीके हैं।

आप देवताओं का अनुग्रह पाने के लिए कल्प साधना कर रहे हैं। आपको विश्वास होगा कि गायत्री माता का हम जाप करेंगे तो गायत्री माता अनुग्रह करेंगी। जरूर अनुग्रह करेंगी। गायत्री माता का स्वभाव ही है कि वह जरूर सहायता करती हैं। यह भी आपको विश्वास होगा कि गुरुदेव आशीर्वाद देंगे, अपने पुण्य का एक अंश देंगे। बिलकुल यकीन रखिए, हमने जिंदगी भर अपने पुण्य के अंश बाँटे

हैं। हमें बाँटने में बड़ी खुशी होती है, और लोगों को खाने में खुशी होती है, पर हमको खिलाने में खुशी होती है। हमारे ऊपर एक और शक्ति छाई हुई है जिसकी वजह से ब्रह्मवर्चस बना है और यह शांतिकुंज बना है। जिसकी प्रेरणा से यह कल्प साधना शिविर लगाए हैं और जिनकी इच्छा से आपको यहाँ बुलाया गया है। वह आपको खाली हाथ जाने देंगे क्या? नहीं। यह तीनों शक्तियाँ ऐसी हैं जो बराबर आपकी सहायता करने के लिए अमादा हैं और सच्चे मन से चाहती हैं कि आपको कुछ दें। गाय सच्चे मन से चाहती है कि हम अपने बच्चे को अपना सारा का सारा दूध पिला दें। जो भी कुछ वह खाती है और जितना दूध बनता है, वह चाहती है कि हम अपने बच्चे को पूरा का पूरा दूध पिला दें, लेकिन बच्चा तो उसका होना चाहिए। बच्चा किसी और का हुआ तब? कुत्ते, बिल्ली का बच्चा हुआ तब? गधी का बच्चा हुआ तब? तो क्यों पिलाएगी गाय! वह गाय का ही बच्चा होना चाहिए। आपको संत का बच्चा

होना चाहिए। आपको ऋषियों का बच्चा होना चाहिए। आपको अध्यात्म का बच्चा होना चाहिए अर्थात आपका चिंतन, चरित्र और आपका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जिससे कि देवता हमेशा आपकी सहायता करते हुए चले जाएँ। इससे कम में बात बनेगी नहीं। इसके लिए आपको त्याग करना ही चाहिए। आपको अपनी बुराइयाँ छोड़नी ही चाहिए, आपको उदार होना ही चाहिए और आपको अपने दृष्टिकोण में महानता साबित करनी ही चाहिए।

मित्रो, भगवान को हम क्या कहें, वह देता तो बहुत है, लेकिन वह उस परीक्षा के बिना कहाँ देता है। आपको सुदामा जी का किस्सा याद होगा कि वह एक बार श्रीकृष्ण भगवान से कुछ माँगने के लिए गए थे और सुदामा जी के माँगने से पहले ही श्रीकृष्ण ने उनकी यह परीक्षा ले ली थी कि यह हमको भी कुछ दे पाएँगे कि नहीं! उनकी पोटली में चावल रखा हुआ था, जिसे देखते ही कृष्ण भगवान ने कहा, "पहले चावल की पोटली हमारे हवाले

कर दीजिए, फिर बाद में करना बात।'' आप अपनी पोटली नहीं खाली कर सकते, तो हम क्यों आपके लिए खाली करेंगे ? हम क्यों आपको सहायता देंगे ? उन्होंने चावल की पोटली को उनके हाथों से छीन लिया और छीनने के बाद में उसको अपने पास रखा। बस वही चावल बढ़ते हुए चले गए और उन्हीं चावलों के बदले सुदामा जी को वह धन मिल गया जिसके बारे में आपने सुना होगा कि द्वारका जी से सारा धन सुदामा जी के पास चला गया था। वे चावल भगवान के खेत में बोए गए थे। यदि वह चावल लेकर सुदामा जी द्वारका नहीं गए होते, तब उनको खाली हाथ आना पड़ता। आप देंगे नहीं तो ले कहाँ से जाएँगे ? इसलिए पहले देने की बात पर विचार कीजिए, परिशोधन की बात सोचिए, पवित्रता की बात सोचिए। अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने की बात सोचिए। इतना अगर आप सोच सकते हों, तो फिर आप देखना किस कदर आपको भगवान की सहायता मिलती है ? देवताओं की कैसी सहायता

मिलती है ? आपके मंत्र कैसे चमत्कारी सिद्ध होते हैं ? आपको व्रत और अनुष्ठान से कितना ज्यादा फायदा मिलता है ? भगवान तो ऐसे ही हैं जो सबको निहाल कर देते हैं। उनने द्रौपदी को निहाल कर दिया था। आपको ध्यान है कि नहीं, भगवान ने द्रौपदी को कितना वस्त्र दिया था ? लेकिन अगर आप माँगें तो क्या आपको मिलेगा ? नहीं देंगे। तो फिर ऐसा पक्षपात क्यों ? मित्रो, एक ही बात है कि द्रौपदी ने यह साबित कर दिया था कि उसको मिलने का हक है। आप भी साबित करिए कि आपको भी मिलने का हक है। आपने द्रौपदी के जीवन की वह घटना सुनी होगी कि जब एक बार वह जमुना में स्नान कर रहीं थीं, तो पास में ही एक महात्मा जी स्नान कर रहे थे। उनके पास एक लँगोटी नहाने की थी और एक पहनने की। हवा का एक झोंका आया और एक लँगोटी बह गई। जिसको पहने थे वह फट गई। द्रौपदी ने देखा कि महात्मा जी की एक लँगोटी बह गई और दूसरी फट गई है और वह शरम के मारे

शरीर को छिपाकर झाड़ी के पीछे बैठ गए हैं। द्रौपदी का मन पिघल गया कि उनकी सहायता करनी चाहिए। उन्होंने अपनी साड़ी के दो टुकड़े किए और आधा टुकड़ा महात्मा जी को दे दिया और कहा, "आप इससे अपने लिए दो लँगोटियाँ बना लीजिए। आपकी भी लज्जा ढक जाएगी और आधी साड़ी से हमारा भी काम चल जाएगा।"

यह क्या थी? द्रौपदी की उदारता थी जो उनके कपड़े के साथ में जुड़ी थी। कपड़े की कीमत क्या हो सकती है? कपड़ा तो जरा सी कीमत का था, लेकिन जब भगवान के भंडार में चला गया तो लाखों गुना हो गया। भगवान ने देखा कि जो आदमी उदार है, उसके लिए उदार होना चाहिए। जो आदमी दयालु है, उसके लिए दयालु होना चाहिए। जो आदमी चरित्रवान है उसके लिए चरित्रवान होना चाहिए। जब दु:शासन उसे नंगी कर रहा था तो भगवान ने द्रौपदी के लिए कितना सारा कपड़ा भेंजा था, कितनी सारी सहायता की थी, यह आपने भी

पढ़ा-सुना होगा। आपसे मुझे यही कहना था कि आप यहाँ देवता का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए आए हैं और अगर आपको अनुदान पाने की इच्छा है तो आपकी यह इच्छा मुनासिब है, सही है आप किसी गलतफहमी में नहीं हैं, किसी अंधविश्वास में जकड़े हुए नहीं हैं। प्राचीनकाल के असंख्य इतिहास ऐसे हैं जिसमें देवताओं ने सहायता की है, अनुग्रह किए हैं। आपको जरूर सहायता मिलेगी, पर एक शर्त को भूलिएगा मत। अगर आप उस शर्त को भुला देंगे तो आप घाटे में रहेंगे, आप निराश होंगे। फिर आप गाली देंगे और सोचेंगे कि मंत्र मिथ्या होते हैं, देवता मिथ्या होते हैं। क्यों मिथ्या होते हैं ? अगर आपने अपनी पात्रता का विकास नहीं किया तब, चिंतन, चरित्र, व्यवहार को उत्कृष्ट और उदार नहीं बनाया, तब आप घाटे में रहेंगे। इसके लिए ही हम आपको यह अनुष्ठान करा रहे हैं ताकि आपका चिंतन बदले, व्यक्तित्व परिष्कृत हो और आपके भीतर का कायाकल्प हो जाए, तभी देवता आपकी

सहायता करेंगे। आप अपने भीतर को बदलने की कोशिश कीजिए। अपना चिंतन बदलिए, अपना चरित्र बदलिए, अपने जीवन का ढाँचा और ढर्रा बदलिए फिर देखिए आपकी बदली हुई परिस्थितियों में जो देवता नाखुश थे–मुँह मोड़े हुए थे, किस तरह आपके गुलाम हो जाते हैं कैसी आपकी सहायता करते हैं ? कैसे आपको छाती से लगाते हैं ? कैसे आपको निहाल करते हैं ? यही अनुभव हमारे जीवन का भी है और इससे आप को भी लाभ उठाना चाहिए। आप अपने आपको खाली कीजिए और निहाल होकर जाइए। बस इतना ही कहना था मुझे आपसे।

ॐ शांतिः

सुपात्र पर ही दैवी अनुदान बरसते हैं

एक बार रामकृष्ण परमहंस से एक शिष्य ने पूछा, "गुरुदेव! क्या कारण है कि एक मंत्र, एक उपासना प्रक्रिया को अपनाते हुए भी एक चमत्कारी सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है, ऋद्धियों-सिद्धियों का स्वामी बन जाता है जबकि दूसरे को कोई विशेष लाभ नहीं मिल पाता?" परमहंस ने उत्तर में एक कथा सुनाई जो इस प्रकार थी—किसी राज्य के मंत्री ने अपने जप-तप से विशेष आध्यात्मिक शक्ति अर्जित कर ली। उसकी चमत्कारी विशेषताओं की सूचना राजा को मिली। राजा ने मंत्री को बुलाकर रहस्य पूछा तो उसने बताया, यह सब गायत्री मंत्र की उपासना का चमत्कार है। इसकी उपासना, साधना द्वारा सब कुछ प्राप्त कर सकना संभव है। राजा ने भी मंत्र और संबंधित विधि-विधान पूछा और उपासना करने लगे। एक वर्ष तक वे जप करते रहे, पर उन्हें वह उपलब्धियाँ नहीं प्राप्त हो सकीं जो मंत्री को हुई थीं। निराश होकर एक दिन मंत्री को बुलाकर

कारण पूछा। मंत्री ने उत्तर देने के बदले राज्य के एक किशोर लड़के को बुलाया और कहा, "बेटे ! राजा के गाल पर एक चपत लगाओ।" अपनी आज्ञा को मंत्री ने बार-बार दोहराया, पर बालक अपने स्थान से टस से मस नहीं हुआ। मंत्री की धृष्टता एवं उद्दंडता को देखकर राजा का चेहरा तमतमा उठा। उसने लड़के को कड़े स्वर में निर्देश दिया, "इस मंत्री को दो चपत लगाओ।" लड़के ने तुरंत दो चपत जड़ दिए। राजा का चेहरा अभी भी क्रोध के आवेश में तमतमा रहा था।

मंत्री ने नम्रता से उत्तर दिया, "राजन ! धृष्टता क्षमा करें। यह सब आपके समाधान के लिए किया गया था। आपके प्रश्न का यही उत्तर है। वाणी से कही बात अधिकारी पात्र की ही मानी जाती है। मंत्र जप से चमत्कार पात्रता विकसित होने पर ही आता है।"

इस कथा को सुनाने के बाद रामकृष्ण परमहंस ने कहा, "उपासना का, मंत्र जप का चमत्कारी प्रतिफल

उन्हें ही मिल पाता है जिन्होंने अपने गुण-कर्म-स्वभाव को परमात्मा के अनुरूप ढाल लिया है।"

संत ज्ञानेश्वर में जहाँ ज्ञान, विवेक, सदाशयता एवं सहिष्णुता की लौकिक विशेषताएँ दिखाई पड़ती थीं, वहीं अलौकिक स्तर की ऋद्धि-सिद्धियों एवं चमत्कारों की झाँकी भी मिलती थी। एक महिला उनकी इन उपलब्धियों से विशेष प्रभावित होकर साधना करने लगी। कुछ समय तक उपासना करने के बाद जब उसे कोई विशेष उपलब्धि नहीं हुई तो वह संत के पास जाकर बोली, "देव ! भगवान भी बड़ा पक्षपाती है। वह किसी-किसी को तो ऋद्धि-सिद्धियों का स्वामी बना देता है और किसी को कुछ भी नहीं देता है।" संत ज्ञानेश्वर मुस्कराए और बोले, "बहन! ऐसा नहीं है। भगवान विशिष्ट विभूतियाँ सत्पात्रों को देता है। पात्रता विकसित करके हर कोई उन्हें प्राप्त कर सकता है।" "तो इसमें भगवान की क्या विशेषता रही? उसे तो सबको समान अनुदान देना चाहिए," महिला ने प्रति प्रश्न

किया। संत उस समय तो चुप रहे, पर दूसरे ही दिन उन्होंने प्रातःकाल मोहल्ले के एक मूर्ख व्यक्ति को उस महिला के पास यह कहकर भेजा कि उससे सोने का आभूषण माँग लाओ।

मूर्ख ने जाकर आभूषण माँगे पर उस महिला ने झिड़ककर उसे बिना आभूषण दिए ही भगा दिया। थोड़ी देर बाद संत ज्ञानेश्वर स्वयं उसी स्त्री के पास पहुँचे और बोले, "आप एक दिन के लिए अपने आभूषण दे दें। आवश्यक काम करके लौटा देंगे।" महिला ने बिना कोई प्रश्न पूछे संदूक खोला और सहर्ष अपने कीमती आभूषण संत को सौंप दिए। आभूषण हाथ में लिए ही संत ने पूछा, "अभी-अभी जो दूसरा व्यक्ति आया था उसे आभूषण क्यों नहीं दिए?" स्त्री बोली, "उस मूर्ख को आभूषण कैसे दे दें?" संत ज्ञानेश्वर बोले, "बहन! जब आप सामान्य से आभूषण बिना सोचे-विचारे कुपात्र को नहीं दे सकती हैं तो फिर परमात्मा अपने दिव्य अनुदानों को कुपात्रों को कैसे दे सकता है? वह तो बारंबार इस बात

की परीक्षा करता है कि जिसको अनुदान दिया जा रहा है उसमें पात्रता है अथवा नहीं।''

पात्रता के अभाव में सांसारिक जीवन में भी कहाँ किसी को कुछ विशेष उपलब्ध हो पाता है। अपना सगा होते हुए भी एक पिता मूर्ख गैर जिम्मेदार पुत्र को अपनी विपुल संपत्ति नहीं सौंपता।

मात्र माँगते रहने से कुछ नहीं मिलता, हर उपलब्धि के लिए मूल्य चुकाना पड़ता है। बाजार में विभिन्न तरह की वस्तुएँ दुकानों में सजी होती हैं, पर उन्हें कोई मुफ्त में कहाँ प्राप्त कर पाता है। अनुनय-विनय करने वाले तो भीख जैसी नगण्य उपलब्धि ही करतलगत कर पाते हैं। पात्रता के आधार पर शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में भी विभिन्न स्तर की भौतिक उपलब्धियाँ हस्तगत करते सर्वत्र देखा जा सकता है।

अध्यात्म क्षेत्र में भी यही सिद्धांत लागू होता है। भौतिक क्षेत्र की तुलना में अध्यात्म के प्रतिफल कई गुने अधिक महत्त्वपूर्ण, सामर्थ्यवान और चमत्कारी हैं। किन्हीं-किन्हीं महापुरुषों में उन

चमत्कारी विशेषताओं को देख एवं सुनकर हर व्यक्ति के मुँह में पानी भर आता है तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए मन ललचाता है, पर अभीष्ट स्तर का आध्यात्मिक पुरुषार्थ न कर पाने के कारण उस ललक की आपूर्ति नहीं हो पाती। पात्रता के अभाव में अधिकांश को दिव्य आध्यात्मिक विभूतियों से वंचित रह जाना पड़ता है जबकि पात्रता विकसित हो जाने पर बिना माँगे ही वे साधक पर बरसती हैं। उन्हें किसी प्रकार का अनुनय-विनय नहीं करना पड़ता है। दैवी शक्तियाँ परीक्षा तो लेती हैं, पर पात्रता की कसौटी पर खरा सिद्ध होने वालों को मुक्तहस्त से अनुदान भी देती हैं। मिलता उन्हें ही है जो लौकिक कामनाओं, ऐषणाओं से मुक्त हैं, निस्पृह और उदार हैं। जिनका हृदय दया-करुणा से अनुप्राणित है। **'मातृवत् परदारेषु, आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की आस्था को जिन्होंने साकार कर लिया है। ऐसों पर ऋद्धि-सिद्धियों की वर्षा अपने आप देवशक्तियाँ करती हैं।

साधना को मोटेतौर पर देवी-देवताओं को प्रसन्न करने का उपाय-उपचार माना जाता है, पर देवताओं का अनुग्रह भी इसी शर्त पर मिलता है कि अपनी पात्रता और उत्कृष्टता प्रमाणित करने के लिए व्यक्तित्व को परिष्कृत स्तर का बनाने में प्रयत्न-पूर्वक सफलता प्राप्त कर ली जाए। कुपात्रों को दैवी अनुग्रह या तो मिलते ही नहीं, यदि कुछ मिलता भी है तो वह दुरुपयोग में सहज ही बरबाद हो जाता है। असुरों की साधनाएँ आरंभ में तो कुछ चमत्कार दिखाती हैं, पर कुछ ही समय में जब उस अहंकार में कुकर्म चल पड़ते हैं तो फिर जड़ मूल सहित उखड़ना पड़ता है। जो सामान्य पुरुषार्थ से कमाया गया था, उसका भी लाभ नहीं मिल पाता। जो सही रीति से कमाया था, वह भी उसी आँधी में उड़ जाता है।

स्वाति की बूँदें बरसती तो सर्वत्र हैं, पर उनसे लाभ केवल वे सीपियाँ ही उठा पाती हैं, जिनमें मोती पैदा करने की मौलिक क्षमता पहले से ही उत्पन्न हो गई है। कहते हैं कि स्वाति बूँदों की सहायता से केले

में कपूर, बाँस में वंशलोचन उत्पन्न होता है, पर यह संभव तभी है जब वे उस लाभ को उठा सकने की अतिरिक्त विशेषता से पहले ही संपन्न हो चुके हों। अन्यथा वह लाभ हर सीप को, हर बाँस को, हर केले को कहाँ मिलता है। मरे हुए को तो अमृत भी नहीं जिला सकता। जीवित व्यक्ति ही उसे प्राप्त करके अमर बनते सुने जाते हैं। कठोर चट्टानों पर पूरी वर्षा ऋतु गुजर जाने पर भी एक तिनका तक पैदा नहीं होता।

दैवी अनुग्रह हो या पुरुषार्थ उपार्जित वैभव। दोनों ही स्तर की सफलताएँ प्राप्त करने के लिए प्रारंभिक प्रयास यही करना पड़ता है कि अपनी पात्रता, प्रामाणिकता और प्रतिभा को ऊँचे स्तर तक विकसित किया जाए। यह सिद्धांत जिन्होंने हृदयंगम कर लिया, समझना चाहिए उन्होंने भौतिक और आत्मिक स्तर की दिव्य विभूतियाँ अर्जित करने का राजमार्ग प्राप्त कर लिया।

❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)